भूमिका

[illegible]

चित्तौड़ की चढ़ाइयां

पहली चढ़ाई

महारानी पद्मिनी

सन् १२७५ ई० में राजकुमार लखमसी किशोर अवस्था में मेवाड़ के राज्य सिंहासन पर सुशोभित हुए। चित्तौड़ राजपूतों की दृष्टि में एक पूज्य स्थान है। किसी समय मेवाड़ की राजधानी था और हिन्दुओं के बड़े बड़े शिल्पकारों ने उसे स्वर्गधाम बना रक्खा था।

लखमसी की बाल्यावस्था में उसकी ओर से उसका चचा (काका) 'भीमसी' नामक राज करता था। भीमसी ऐसा चतुर और बुद्धिमान था कि उसके समय में यह रियासत सर्व प्रकार के झगड़े टंटों से सुरक्षित थी। दुःख और अशान्ति का कहीं नाम भी नहीं था किन्तु चारों ओर हर्ष और आनन्द के चिह्न दिखाई देते थे।

किलों में से होता हुआ कई महीनों के बाद चित्तौड़
तक पहुँचा और इस प्रकार उसने गढ़ों को घेर लिया
इसी प्रकार के भेद [illegible] को घेर लेते हैं। अलाउद्दी[illegible]
लड़ाई में कई [illegible] नहीं हटा सका था, परन्तु अं[illegible]
की धारणा ने इसे नाश किया दिया।

अलाउद्दीन खिलजी [illegible] दिल्ली लौटने [illegible]
कि इसमें [illegible] [illegible] और पूर्ण [illegible] देने [illegible]
[illegible]

[illegible]

सो सेना लेकर आप पर चढ़ाई की। अस्तु, जो होगया उसका तो कोई उपाय ही नहीं, परन्तु भविष्य में ऐसा न होगा और समय समय पर मैं आप का सहायता देता रहूँगा। राजपूतों में कपट और मायाचार कहाँ! ये बातें तो उनमें होती हैं जो कायर और दुर्बल होते हैं। राना ने समझा कि जब अलाउद्दीन मेरे महल में कतिपय सैनिकों के साथ इस प्रकार निःशंक होकर चला आया, तो फिर मुझे किसी बात की चिन्ता नहीं होनी चाहिये। अतएव उसने अलाउद्दीन की इस शर्त को स्वीकार कर लिया कि मैं तुम्हें पहाड़ी की तराई तक पहुँचा दूँगा और यह कह कर बादशाह के साथ चल पड़ा। पापी अलाउद्दीन का संकेत पाकर सैनिकों ने महाराणा को पकड़ लिया और उसे अपने शिविर में ले गए।

जिस समय ये समाचार चित्तौड़ में पहुँचे, सब लोगों के होश उड़ गये। महारानी पद्मिनी की दशा बड़ी शोचनीय थी। इतने में पापी दुराचारी अलाउद्दीन ने कहला भेजा कि पद्मिनी को हमारे डेरे में पहुँचा आओ, नहीं तो भीमसी का बन्दीगृह से मुक्त होना सर्वथा असम्भव है। इस समाचार से राजपूतों में एक आग सी लग गई। रानी की छाती पर शोक का पहाड़ टूट पड़ा। उसको जितना दुःख हुआ, उसे हम लेखनी द्वारा प्रकट नहीं कर सकते। उसके मुख की कान्ति जाती रही, नेत्रों की ज्योति मन्द पड़ गई, काटो तो शरीर में रक्त की बूँद नहीं। कहाँ वह इतनी रूपवती थी कहाँ उसकी

करने को तैयार है. परन्तु यह कहती है कि जब मैं जाऊँगी तो अपनी सारी सहेलियों को भी साथ में लाऊँगी। यदि यह मंजूर है तो मैं चलने को तैयार हूँ।

दूत के साथ एक राजपूत भी गया। ज्योंही अलाउद्दीन ने सुना कि पद्मिनी आने को तैयार है, उसके हर्ष का कोई पारावार न रहा। तुरंत लोगों [illegible] किया गया, भला हर्षित क्यों न होता! जिसके लिये वह अपने राज्य तक को मिट्टी में मिलाने के लिये तैयार था, वह केवल डोलियों के पकड़े जाने पर स्वयं आ रही है। यदि अब भी वह प्रसन्न न होता तो फिर कब होता! वह प्रसन्न होकर कहने लगा, दूत! जाओ जितना खर्च चाहिए हो, पद्मिनी को ले आओ। अब मुझे एक एक पल कठिन हो गया है। जा कर कहो, उसे तुरन्त यहाँ लावें। क्योंकि आज से वह न केवल मेरे राज्य की स्वामिनी है किन्तु मेरे मन और तन की भी स्वामिनी है। इतना सुनना था कि राजपूत बोल उठा—महाराज! महारानी के साथ कुछ हथियार बन्द राजपूत भी आवेंगे। अलाउद्दीन ने हँसकर कहा—राजपूत सरदार! तुम विश्वास रक्खो, रानी का कोई कुछ नहीं कर सकता। मेरी आज्ञा ईश्वरीय आज्ञा से भी बढ़कर है। किसी का क्या साहस है कि जो मेरे सामने चूँ भी कर सके।

राजपूत ने चित्तौड़ पहुँच कर सारा समाचार महाराज से ज्यों का त्यों कह सुनाया। अब राजा ने [illegible] की तैयारी

अलाउद्दीन पद्मिनी के प्रेम से उन्मत्त हो रहा था। उसे अपने तन बदन का सुध नहीं थी। उसने सोचा कि अब रानी यहाँ से कहाँ जा सकती है। बस, दो घड़ी के लिये राजा को बन्दीगृह से मुक्त करा दिया और इधर रानी जो एक पालकी में बैठी हुई थी, राजा के पास आई। अलाउद्दीन वहाँ उत्कण्ठा से पद्मिनी के आने की द्वार पर बाट देख रहा था। जौहरी को तो आशा ही नहीं थी कि विवाह के लिये रानी आ गई। के भीतर एक अत्यन्त सुन्दर मण्डप तैयार कर रहा। जब दो घड़ी बीत गई और रानी नहीं आई, तो उसके क्रोध की सीमा नहीं रही और वह बेधड़क उसी कमरे में चला गया, जहाँ राजा बैठे थे, पर वहाँ कोई नहीं मिला। केवल एक राजपूत हथियार बन्द खड़ा था। ज्यों ही वीर राजपूत ने अलाउद्दीन को देखा त्यों ही उसने तलवार से आक्रमण कर दिया। अलाउद्दीन भय से थर थर काँपने लगा और क्रोध से चिल्ला उठा कि हा! रानी ने धोखा दिया। यह सुनते ही मुसलमान सिपाही दौड़े और चारों ओर दौड़ पड़े। यह समय बड़ा नाजुक था। राजपूतों ने ललकार कर कहा, ऐ बहादुर राजपूतो! अब समय आ गया है देखो ये दुष्ट बचकर जाने न पावें। इस शब्द के सुनते ही राजपूतों के बहादुर राजपूत जो पालकियों में सवार होकर आये थे, तुरन्त बाहर निकल आए। चारों ओर से तलवारें की झनझन खटकने लगीं। बादल वर्ष का छोटा बालक अलाउद्दीन पर

हुई। जिस समय उस वीर धर्मपत्नी ने यह समाचार सुना था, तुरन्त उस के साथ सती होने को तैयार हो गई और उसका सिर गोद में लेकर चिता में बैठ गई। अनेक राजपूत उस महापुरुष के दर्शनों को आए। उनमें सती का इकलौता पुत्र बादल भी था। सती ने अपने पुत्र को सम्बोधित करके कहा, बादल ! तेरे पिता ने किस प्रकार क्षात्र धर्म का पालन किया ! उस समय बालक ने उत्तर दिया—"माता ! पिता जी ने इस प्रकार शत्रुओं का विध्वंस किया जिस प्रकार किसान अपने खेत को एक ओर से काटता है। मैं उनके साथ चलकर उनकी वीरता के अद्भुत और आश्चर्यजनक दृश्यों को अपने हृदय पट पर अंकित करता जाता था। लाखों मनुष्य रक्त की नदी में डूबते थे। जब अन्त समय आ गया तो वे आराम से लाशों पर लेट गये और एक साथ की तकिया लगा कर रण में सो रहे।

उस आदर्श और धर्मात्मा सती ने एक बार फिर मुस्करा-कर पूछा, बेटा बादल ! अपने पिता का वीर-वृत्तान्त एक बार फिर वर्णन करो। मेरे प्राणपति ने किस प्रकार रण में क्षत्रिय-धर्म का पालन किया ! दूसरी बार बादल ने इस प्रकार वर्णन किया कि जब शत्रुओं की सेना में कोई ऐसा बहादुर नहीं हुआ जो उनका सामना करता, तब वे थक कर आराम करने के लिए लेट गये और हर्ष और आनन्द के साथ उन्होंने स्वर्गधाम का मार्ग लिया। सती इस बार का वर्णन सुनकर

सारे बहादुर जोश में आगए। यद्यपि संख्या में वे उतने नहीं थे, तथापि उनकी वीरता ने वे गुण दिखाए कि अलाउद्दीन को जान बचाकर भागने ही में भलाई जान पड़ी।

अलाउद्दीन की पराजय हुई थी। चाहिये यह था कि वह चुपचाप अपने विचार को त्याग देता, परन्तु नहीं, दिन प्रति दिन उसका विचार दृढ़ होता गया और इस बार उसने यह संकल्प कर लिया कि जब तक मेरा या राजपूतों का निर्णय न हो जावेगा, मैं कदापि दिल्ली लौट कर नहीं जाऊँगा। यह घटना १४ वीं शताब्दी की है।

अलाउद्दीन ने चित्तौड़ को जीतने का दूसरा प्रयत्न किया। इस समय किशोर लखमसी का देहान्त हो चुका था। उसके स्थान में चित्तौड़ वासियों के विशेष आग्रह से महाराणा भीमसी राज्य सिंहासन पर सुशोभित हुए थे; परन्तु मुसलमानों के चढ़ाई करने के कारण चित्तौड़ की दशा कुछ ऐसी पतित हो गई थी कि वे उस समय लड़ने के लिये तैयार नहीं थे। कुछ दिनों तक मौन और शान्ति के साथ विश्राम करना चाहते थे। इस समाचार को सुनकर वे अधीर हो गए थे; परन्तु महारानी पद्मिनी ने सब को ढाड़स देकर कहा, "वीरो! ईश्वर उनकी सहायता करता है जो स्वयं अपनी सहायता करते हैं। उठो, हतोत्साह मत हो। क्षत्रियों को रणभूमि से हटना शोभा नहीं देता। जाओ, रणक्षेत्र में शत्रु से जी खोल कर लड़ो।" इतना सुनना था कि सब के सब बहादुर जोश

दिन का कुछ समय बीतने पर लखमसी अपने पलंग पर पड़ा सो रहा था कि इतने में उसे ये शब्द सुनाई दिये कि "मैं भूखी हूँ।" इतना सुनते ही लखमसी जाग पड़ा। उसने देखा कि एक स्त्री उसके सामने खड़ी हुई इन अंतिम शब्दों को कह रही है। राणा ने उसकी ओर देख कर प्यार से कहा, "हे चित्तौड़ की देवी! मेरे आठ सौ हज़ार सरदार मारे गये, क्या अब भी तू तृप्त नहीं हुई?" वह बोली, "मैं राजबलि चाहती हूँ। यदि तेरे बारह बेटे राजमुकुट धारण किये हुये रणभूमि में लड़कर प्राण न देंगे तो चित्तौड़ की गद्दी पर वह राज्य करेगा जिसके सन्तान न होगी।"

इन शब्दों का यह अर्थ था कि लखमसी के बारह पुत्र लड़ने के लिये तैयार हो जावें जिससे राजपूतों का राज्य बँधा रहे। सवेरा होते ही महाराणा ने यह बात सबको सुनाई; परन्तु किसी को विश्वास न हुआ। सब ने हँस कर कहा, महाराजा आप को धोखा हुआ होगा। इस पर राणा ने कहा कि आज सब लोग आधी रात के समय मेरे शयनागार में उपस्थित रहें। आज्ञा पालने में भला किसका इनकार हो सकता था! जब आधी रात का समय आया, तो वही स्त्री सब को यह कहती हुई दिखाई दी कि "अपने पुत्रों को एक एक करके राजमुकुट पहिना और उन्हें रण में बराबर भेजता जा। ऐसा करने से चित्तौड़ पर तेरे वंश का अधिकार रहेगा।" जब सब राजपूतों ने अपनी आँखों से देख लिया

न पाँच वर्ष की थी। राजा ने आज्ञा दी कि इसको लड़ने लिये न भेजा जाय जिससे वंश का नाम सुरक्षित रहे।

जब ये अमूल्य बलिदान हो चुके और कोई आशा बने की दिखाई न दी, तो राजा ने जौहर की आज्ञा की। हर उस समय किया जाता था, जब कोई आशा जीने की रहती थी। और राजपूत मरने जीने की आशा को छोड़ कर नी तलवारें लेकर कूद पड़ते थे और मरने मारने के लिये यार हो जाते थे। राजपूतनियाँ अपना पतिव्रत धर्म्म थर रखने और तानेदारों का साहस बढ़ाने के लिये चिता बैठकर राख की ढेर हो जाती थीं।

महारानी पद्मिनी ने सब स्त्रियों को बुलाया और कहा बहिनो! राजपूत आज रण शय्या पर सो रहे हैं। अब हमारे लिये और कोई चारा नहीं, यह आग जल रही है। यह मको आवाहन कर रही है। आओ हम सब बहादुरी के साथ सी पर चढ़ जायें।" राजपूतनियों के चेहरे पर दुख के चिह्न न थे। वे सब प्रसन्नता के साथ अग्नि पर बैठ गईं। उन सब के बीच में प्रसिद्ध सुन्दरी पद्मिनी भी थी; चारों ओर द्वार बन्द कर दिये गये। एक शब्द भी कहीं सुनाई नहीं देता था। सर्वत्र शान्ति विराजमान थी। किसी को भी मृत्यु का चिन्ता नहीं थी, क्योंकि सब स्त्रियाँ जानती थीं कि यह बलिदान है और बलिदान अच्छा फल दिखाए बिना नहीं रहता।

चिता में आग दे दी गई और देखते देखते इस संसार

[illegible]

[illegible]

दूसरी चढ़ाई

महारानी पद्मावती

——०:०——

राणा लक्ष्मणसिंह शांत आदमी थे। राणा रत्नसिंह और [illegible] पहले मर चुके थे। उनके पीछे लक्ष्मणसिंह ने चित्तौड़ के सिंहासन को सुशोभित किया। भाई के वियोग से लक्ष्मणसिंह बड़े दुःखी हुए। कहावत है कि 'भाई दाहु बल है।' [illegible] का भरना है, इस वियोग से उनकी क्या दशा न होगी किन्तु क्या हो सकता था! जीवन मृत्यु का प्रवाह है। जो आता है अवश्य जायगा, प्रातःकाल के बाद संध्या और उसके उपरान्त रात्रि, यह संसार का नियम है। [illegible] और राणा रत्नसिंह के मरने के पश्चात् इनको राज-काज से छुटकारा नहीं रहा। राज्य के कारोबार को छोड़कर उनको और बातों की बहुत कम फुरसत [illegible] प्राप्त करने के कारण हर प्रकार के कष्टों के सहन करने के योग्य हो गया था। वह साहसी, शांत, बुद्धिमान, पुरुषार्थी और वीर राजा था।

जिस समय लक्ष्मणसिंह [illegible] सिंहासन पर आरूढ़ हुए,

हाई में उनकी एक टाँग भी गोले से उड़ गई थी [illegible]
[illegible] में भिन्न भिन्न स्थानों पर कम्मों गोलियों के [illegible]
, परन्तु अंगहीन होने पर भी सम्मानित थे [illegible]
[illegible] घर घर काँपते थे। जहाँ उनका सुन्दर सरदार [illegible]
[illegible] था वहाँ एक छोटा सा चबूतरा और एक मंदिर बना [illegible]
[illegible] महापुरुष की स्मृति में बना हुआ है।

सरदारनी उनकी सब से छोटी रानी थी। वह सब [illegible]
[illegible] अधिक सुन्दर और प्रवीणा थी। राणा भी इन से [illegible]
[illegible] करता था। यहाँ तक रानी का भी था। [illegible]
[illegible] कि [illegible] साथ ऐसा व्यवहार करेगा [illegible]
[illegible] हो गई थीं, आँख फूटी थी, हाथ टूटा था, [illegible]
[illegible] है ! किसी ने सच कहा है कि [illegible]
[illegible]

[illegible]

उस समय मेवाड़ की दुर्व्यवस्था देख कर गुजरात के [illegible]दुर सुलतान ने चढ़ाई कर दी। कारण यह था कि राणा [illegible]मसिंह ने उसके पिता मुज़फ़्फ़र को बन्दी कर लिया [illegible]। विक्रमादित्य ने लड़ने का विचार किया; परन्तु सेना की [illegible]ा बड़ी शोचनीय थी। कुछ लोग शत्रु से भी जा मिले थे। [illegible]। निडर राजपूत मुसल्मानों के साथ मिल कर मेवाड़ [illegible] लड़ने के लिये आये तो करुणावती ने रणभूमि में खड़े [illegible]कर उच्च स्वर से कहा—'नपुंसको! अपने राजा के प्रति [illegible]ई कृतघ्नता! बड़े शोक और लज्जा की बात है।' उसी [illegible]मय राजपूतों का विचार बदल गया और सेनापति ने खड़े [illegible]कर कहा कि हम केवल उदयसिंह को बचाने के लिये [illegible]ाये हैं कि जिससे विक्रमादित्य से उसे कोई हानि न पहुँचे। [illegible]नी करुणावती ने फिर बुरा भला कहा और उसका बहुत [illegible]छ प्रभाव पड़ा।

बहादुर यह बात देख कर घबड़ा गया क़िले के घेरने का विचार करने लगा। राजस्थान के लेखक टाड साहब राजस्थान में लिखते हैं कि चित्तौड़ के नाम में एक विशेष प्रकार का जादू था और वास्तव में यह सत्य भी प्रतीत होता है। भारत में कोई ऐसा देश नहीं है जिसकी इतनी सहायता की गई हो। क्या पुरुष और क्या स्त्री सभी ने जीवन और धन का विचार छोड़ कर चित्तौड़ को फला फूला रखने का भरसक प्रयत्न किया।

धर्मात्मा और वीरा करुणावती ने राजपूतों के पिछले दुर्व्यवहार का ध्यान न करते हुये सिपाहियों की कमान अपने हाथ में ले ली और राजपूतों को ललकार ललकार कर सहायता को बुलाया। जिस समय वह बोल रही थी यह ज्ञात पड़ता था कि मानों सिंहनाद हो रहा है। कुछ के शब्दों में सुरीलापन था और कुछ आत्म-गौरव और स्वदेशाभिमान का जोश था। सब के सब मरने के लिये तैयार हो गये। देखते देखते हज़ारों की संख्या में राजपूत इकट्ठे हो गये और सब के सब क़िला के बचाने की चिन्ता में लग गये। निस्सन्देह यह केवल राजपूतों का ही काम था।

बहादुर के पास काफ़ी सेना थी। तोपख़ाना भी बहुत बड़ा था। महीनों लड़ाई होती रही और रानी का और वीरता देखकर राजपूत भी बराबर डटे रहे। राजपूतों ने जी खोल कर लड़, परन्तु कहाँ वो और कहाँ हम। विवश होकर राजपूत हताश होगये और यह निश्चय किया कि बहादुर के पास क़िला कि कुंजी भेज दी जाय जिस समय रानी ने ये शब्द सुन, वह क्रोधित होकर बोली, "क्यों? क्या राजपूतनियों की छाती का दूध पीकर राजपूत इसी प्रकार बात किया करते है? स्मरण रहे, मैं केवल तुम्हारे राजा ही की माता नहीं हूँ, किन्तु तुम्हारी भी माता हूँ। माता की लज्जा और धर्म की रक्षा करो और सपूतों की भाँति लड़ मर कर माता के साथ प्राण गवां दो।"

इस बात का कौन उत्तर देता? राजपूत जानते थे कि अब क़िले के जीते जाने में कोई कसर नहीं रही है। रानी ने बहादुर राजपूतों को क़िले के चारों ओर खड़ा कर दिया उस दिन रक्षा बन्धन का त्यौहार था। उसने एक राजपूत को बुलाकर उसके हाथ में राखी बांधी और कहा कि यह पत्र और राखी ले जाकर दिल्ली के सम्राट को देना और मेरा प्रणाम कहना। पत्र में यह लिखा था।

"भाई हुमायूँ!

इस समय तुम्हारी बहन घोर विपदा में है। तुम आकर इसे इस विपदा से बचाओ और अपनी बहिन की भी रक्षा करो। मेवाड़ राज्य के काम आओ। मैं आज से तुम को अपना राखी बंद भाई समझती हूँ!

विपदा ग्रसित—कर्णावती

राखी की प्रथा भारत में प्राचीनकाल से प्रचलित है। जब कभी किसी अबला पर कोई विपत्ति आती थी, तो वह किसी व्यक्ति के पास जिसको वह योग्य समझती थी, राखी भेज देती थी और वह यथाशक्ति उसकी रक्षा किया करता था। यह कभी नहीं सुना गया कि किसी हिन्दू ने इन्कार कर दिया हो।

जिस समय राखी भेजी गई थी, हुमायूँ दिल्ली में मौजूद नहीं था। वह बङ्गाल में शेरशाह से लड़ रहा था राखी पाकर वह बड़ा प्रसन्न हुआ। [illegible] की लड़ाई उसने बन्द

कर दी और एक बड़ी भारी सेना लेकर धावा मारता हु चित्तौड़ आ पहुँचा, परन्तु उसके पहुँचने में कुछ दे गई था। गढ़ जीता जा चुका था, राजपूतों ने एक एक का जान दे दी थी। वे अन्त समय तक बराबर लड़ते और रानी अपनी वीरता से उनके साहस को निरन बढ़ाती रही।

सरदार मारे गए। बाघ जी को राजा बनाया। मेव का झंडा उसके सिर पर लहराने लगा। टाड साहब लिख हैं "कि जिस शान शौकत और चमक दमक से मेवाड़ झंडा उस दिन लहरा रहा था शायद ऐसा कभी न लहराया।" बाघ जी भी मारा गया। यह सूरजमल का बे था। उसने दुर्गा से वचन भरने के लिये राज्य पदवी धारण किया था।

अन्त में जब हुमायूँ समय पर न आ सका और रानी समझी कि वह किसी आवश्यक कार्य के कारण नहीं आया और अब बचने की कोई आशा न रही, तो उसने सब सरद को इकट्ठा किया और कहा:

"वीर पुत्रो!

तुमने बड़ी वीरता और दृढ़ता से शत्रु का सामना किय इसलिए तुम्हारी माता तुमसे बहुत प्रसन्न है और तु आशीर्वाद देती है। परन्तु पुत्रो! तुम यह न समझो मेरा है अन्त समय में राजपूतों के नाम को बट्टा लगाऊँगी

कदापि नहीं। लो यह तलवार हाथ में लो और शत्रुओं को मारते काटते सिंह के समान प्राण दे दो। यही तुम्हारा सच्चा जीवन है।"

इन बातों को सुन कर राजपूतों का जी भर आया। उन्होंने कहा कि उदयसिंह को किसी और स्थान पर चले जाने की आज्ञा दे दीजिये। रानी ने उनकी ओर प्रेम भरी दृष्टि से देख कर कहा—"पुत्रो! मेरी दृष्टि में तुम और उदयसिंह दोनों बराबर हो। मैं उसमें और तुममें कोई भेद नहीं समझती। इस कारण तुमको अधिकार है कि जो उचित समझो करो और जहां उचित समझो वहां उसे भेज दो।"

राजपूतों ने यह विचार किया कि उदयसिंह को उसके माना के यहां बूंदी में भेज दिया जाय कि जिस से उस नवीन खिलती हुई कली के फूलने फलने की आशा हो सके। अतएव उदयसिंह को बुलाया गया और उस से कहा गया कि भाई तुम बूंदी चले जाओ, कुछ सिपाही तुम्हारे साथ किये देते हैं। उदयसिंह इतना सुनते ही चिल्ला कर दौड़ता हुआ माता के चरणों में गिर पड़ा और कहने लगा—'माता! मुझे भी अपने साथ मरने दो।' रानी ने कहा—"नहीं बेटा! तुमको राजा बनना है। इसलिये जो राजपूत कहें, वही करो, परन्तु आज का दिन स्मरण रखना।"

यद्यपि ये बातें रानी ने कुछ कठोरता से कही थीं, परन्तु जो लोग माता के प्रेम से परिचित हैं, वे स्वयं अनुमान कर

सब चुप हैं, चारों ओर सन्नाटा छाया हुआ है। यदि उस समय सुई भी गिरता तो उसका शब्द बराबर सुनाई देता। केवल धीरे धीरे नाचे नाचे जप रहा है। महारानी कर्णावती सब के बीच में इस प्रकार बैठी हुई हैं जिस प्रकार तारागण के बीच में चन्द्रमा रहता है। सब शांति और मौन के साथ एक विचित्र समय की प्रतीक्षा कर रही हैं कि इतने में तड़ाक तड़ाक के शब्द सुनाई दिये। तेरह हज़ार देवियों के शरीर से आग की चिनगारियां निकलने लगीं और उनका धुआं आकाश पर स्त्रियों.........के दुष्टों से न्याय कराने के लिये उड़ने लगा।

राजपूतों ने जब यह दशा देखी तो उनके नेत्रों में रक्त उतर आया। बाघसिंह देवलिया जो भोजन करने के लिये गया हुआ था; अपने बचे खुचे सैनिकों को लेकर एक उन्मत्त की नाईं बहादुर पर झपटा। जिस प्रकार समुद्र की लहरें बड़े वेग से बहती हैं और किसी की परवाह नहीं करतीं, ठीक यही दशा राजपूतों की भी थी। वे आगे बढ़े हुए चले जा रहे थे; परन्तु उनकी संख्या थोड़ी थी, इसलिये उन्हें सफलता नहीं हुई, फिर भी उन्होंने हज़ारों का तलवार के घाट उतार दिया। एक राजपूत या राजपूतनी भी छोड़ कर गढ़ में नहीं रही। सब जहाँ के तहाँ ही कट मरे।

अब पापी बहादुर सुलतान ने नगर में प्रवेश किया, परन्तु वहाँ क्या था? राख तक भी नहीं थी। राख भी रक्त में परिवर्तित होगई थी। स्त्रियां चिता में बैठ कर जल चुकी

राणा उदयसिंह

—०—

चित्तौड़ में आकर हुमायूँ ने विक्रमादित्य को फिर सिंहासन पर बैठा दिया था, पर विक्रमादित्य ने विपत्ति से कोई शिक्षा ग्रहण नहीं की थी। जिस निष्ठुरता से वह अपने पहले सरदारों के साथ व्यवहार करता था, उसमें उसने किसी प्रकार कमी नहीं की वरन् वृद्धि की। सरदार उस से बड़े दुःखी थे। चित्तौड़ लौट आने पर उनको आशा थी कि वह अपने स्वभाव को छोड़ देगा, परन्तु जिसका जैसा स्वभाव बन जाता है वह कहाँ छूटता है। दिन दूना रात चौगुना उसका बुरा स्वभाव बढ़ता गया। कुछ समय तक बिचारे सरदारों ने संतोष किया और अनेक प्रकार की आपत्तियाँ और कठिनाइयाँ सहन कीं, क्योंकि उस समय उसके अतिरिक्त मेवाड़ की गद्दी पर राज्य करने वाला कोई दिखाई नहीं देता था, पर संसार में कोई भी वस्तु ऐसी नहीं है जिसका एक दिन अन्त न हो।

एक दिन की बात सुनिये। सरदार लोग सभा में एकत्र थे। महाराज भी राज्य सिंहासन पर आरूढ़ थे। बातों बातों में उनके क्रोध की ज्वाला भड़क उठी और अजमेर के अमरसिंह नामक एक वृद्ध सरदार को उन्होंने भरी

बुलवा भेजा। वह राजा नहीं हो सकता था क्योंकि वह राजा की दासी से पैदा हुआ था, इस कारण उसे सेनापति बनाने का विचार था। बनवीरसिंह को कुछ संकोच हुआ। उसने इस विचार को पसन्द नहीं किया, परन्तु उसे मेवाड़ की गद्दी का कोई अधिकार नहीं था। भला राजसी मुकुट दासी के पुत्र के मस्तक पर कैसे रक्खा जाता?

दूत खाली हाथ लौट आया। सरदारों ने फिर कहला भेजा कि मेवाड़ को एक बलवान योद्धा राजपूत के संभालने की आवश्यकता है। जब मेवाड़ के सरदार उसे बुला रहे हैं तो उसका इस प्रकार इन्कार करना राजपूती शान को शोभा नहीं देता। मेवाड़ के राजपूतों को पूरी आशा है कि बनवीरसिंह अवश्य राज्य का प्रबन्ध कर लेगा। इस लिये अब बनवीरसिंह के पास कोई उत्तर नहीं रहा था। उसने सरदारों की बात को स्वीकार कर लिया, परन्तु गद्दी पर बैठते ही उसका हृदय पलट गया। उसने सोचा कि जब तक उदयसिंह मर न जायगा तब तक मैं पूरी तौर से सुख न भोग सकूँगा। उसने सोचा कि विक्रमादित्य को भी मार डालना उचित है। इसलिये वह रात होने की बाट देखने लगा।

उस समय बालक उदयसिंह इन सब षड्यन्त्रों से अलग महल में खेल रहा था। वहाँ खाता पीता, सोता

और खेलता रहता था। उसकी धाय का नाम पन्ना
पन्ना का इकलौता बेटा उदयसिंह का साथी था। सं
का समय था, नाई कमरे में खाना लाया। उदयसिंह
खाकर आराम से बेसुध पड़ा सो रहा था और उसका स
भी उसके पास ही सो रहा था। धाय सामने ही बैठी
दोनों बच्चों को प्रेम की दृष्टि से देख रही थी।

इतने में भीतर से रोने चिल्लाने की आवाज़ आई।
सुन कर पन्ना का सिर चकरा गया। वह घबड़ा कर
खड़ी हुई। स्त्रियों के रुदन-क्रन्दन से सारा महल गूँज उ
चारों तरफ़ उदासी छागई। दीवारें हिलती मालूम
थीं। यह हाहाकार कोई साधारण नहीं था। शब्दों से म
होता था कि कोई मर गया है और उसका शोक म
आ रहा है। नाई भी आश्चर्य में था। भय से उसके
भूमि में गड़ जाते थे। क्या पन्ना इस भेद से परि
नहीं थी? क्या महल के किसी कोने में बैठे रहने से उ
इधर उधर के समाचार नहीं मिलते थे? सरदार बनवी
अपने हाथ से विक्रमादित्य का काम तमाम कर दिया
यही कारण था कि स्त्रियाँ इतने उच्च स्वर से रुदन
रही थीं।

पन्ना का कोमल हृदय काँपने लगा। वह निराश
दोनों की ओर टकटकी लगाये हुये देख रही थी। उसको
विश्वास था कि जब तक राणा साँगा का दूसरा पुत्र जी

दुष्ट हत्यारा कभी शान्ति से न बैठेगा। उसने उसी समय
ते हुये बच्चे को उठा लिया। उसके शरीर पर से बहुमूल्य
त्रों को उतार लिया और उसे टोकरे में रख कर नाई से
हा कि जा, इसे अमुक नदी के किनारे रख आ, ऊपर से
क्ष के सूखे पत्ते डाल देना, मैं भी अभी आती हूँ। नाई ने
करा उठा लिया और किसी मार्ग से निकलता हुआ नदी
ी ओर चला। चौकीदारों ने समझा कि बचा खुचा खाना
अपने बाल बच्चों के लिये लेजाता होगा, इसलिये किसी ने
ोक टोक नहीं की। नाई तो पहुँच गया, परन्तु पन्ना के हाथों
े अभी बड़ा बलिदान होना रह गया था। उसने उदयसिंह
े कपड़े अपने पुत्र को पहिना दिये और आप एक कोने में
छिप कर बैठ रही।

उसको अधिक प्रतीक्षा नहीं करनी पड़ी। शीघ्र किसी
आने जाने के पाँव की आहट सुनाई दी, उसने कमरे के पर्दे
को उठा कर पन्ना से पूछा, राजकुमार कहाँ है उसे शीघ्र
दिखा दे?

थोड़ी देर तक उसका कलेजा काँपता और धड़कता रहा,
मानो उसके मुँह पर किसी ने मोहर लगा दी थी। वह एक
शब्द भी न कह सकी। कुछ देर के बाद उसने हाथ से पलंग
की ओर संकेत कर दिया जिस पर उसका पुत्र लेटा हुआ था।
हा! एक चमकती हुई तलवार ने भोले भाले निरपराधी
बालक के कलेजे में घुस कर क्षण भर में उसका खून पी

न थी। राजपूत क्या नहीं कर सकते। उसने उदयसिंह की
करके अपने नाम को चित्तौड़ के इतिहास में, भारतवर्ष
तिहास में, नहीं संसार के इतिहास में सदैव, के लिये
अक्षरों में अंकित करा दिया। जब तक संसार है तब
पन्ना के यश की विमल ध्वजा पताका फहराती रहेगी
उसकी कीर्ति की माला जपी जायगी।

उदयसिंह कहाँ का कहाँ पहुँच गया था, परन्तु यहाँ उस
मृतक-संस्कार किया गया था। पन्ना ने विदा होने की
मांगी। अब भला उसका महल में क्या काम था?
बच्चे की वह धाय थी, वह प्रत्यक्ष में मर चुका था।
को आज्ञा मिलगई। वह बेचारी अपना सामान उठा कर
दी और सदा के लिये महल से विदा होगई।

नगर से कुछ दूरी पर नदी की सूने रेत में उसने नाई
टोकरे के पास बैठा हुआ पाया। बच्चा नींद में चूर था।
यहाँ से बच्चे को लेकर उसी समय चल दी और उन
कर पहाड़ी मार्गों में से होकर जहाँ मर्दों की हिम्मत चलने से
जाती थी, वह देवल पहुँची। वहाँ बाघजी का पुत्र रहता
तो किसी समय चित्तौड़ की सहायता में काम आ चुका
पन्ना ने राजकुमार को उसके पास रखना चाहा। सरदार
पन्ना के साथ बहुत अच्छा व्यवहार किया परन्तु उसने यह
साफ़ साफ़ कह दी कि मैं उदयसिंह को शत्रुओं से बचा
नहीं रख सकता। देवल चित्तौड़ के बहुत ही निकट है।

[illegible] और [illegible] के [illegible] है [illegible] के [illegible] [illegible] और [illegible] के [illegible] के [illegible] का [illegible] में [illegible] और [illegible] के [illegible] के लिये [illegible] है। [illegible] और [illegible] है। [illegible] है। [illegible] के

है। मेवाड़ के सरदार उदयसिंह की मौत पर हाथ
कर पछताते थे। वह दिन बड़ा ही अशुभ था जिस
नवार को मेवाड़ के सिंहासन पर बैठने का अवसर
दा था। परन्तु अब क्या हो सकता था, अपने किये
ल ही क्या है?

जानते थे कि राणा साँगा का वंश नाश होचुका है।
स वंश का आरम्भ होना असम्भव है। इन्हीं बातों करके
सात वर्ष बड़ी कठिनाई से व्यतीत किये।

क बार किसी त्योहार उत्सव के दिन कमलमेर के क़िले
मनाया जारहा था। शाहशाह के समस्त सम्बन्धी और
ार वहां उपस्थित थे। खाने पीने और उठने बैठने का
। प्रबन्ध था। राजपूत सरदार अपने अपने स्थान पर
और सन्ताप के साथ बैठे हुये थे। शाहशाह के भतीजे
ो का कटोरा अपने हाथ से उठा लिया जो केवल
त्रों ही का काम था। लोगों ने उसे बहुत धमकाया
तु वह खड़ा हुआ हँसता ही रहा। उससे बहुत कुछ कहा
और उसकी प्रशंसा भी की गई, परन्तु उसने एक भी न
।। यह देखकर ज्योतिषियों ने कहा कि शाहशाह इस लड़के
के को अपने पास में कदापि भी नहीं आने दें। सभा में
चतुर और बुद्धिमान् पुरुष भी बैठे [illegible] ने कहा
र पुत्र में शाहशाह के वंश के कोई [illegible] पाये जाते।
न निश्चय जानो यह कदापि [illegible] होना नहीं है।

गों से यह प्रथा नहीं चल सकी। एक बार जब उसने किया तो सरदार चन्दावत ने उसके लेने से इन्कार कर और कहला भेजा कि बाप्पारावल की सन्तान से जिस या लेना उचित था, अब दासी के पुत्र के हाथ से उसका उचित नहीं है।

राजपूत योद्धा युद्ध के लिये तैयार थे। उदयसिंह के मान होने का समाचार सुनकर वे और भी जोश में गये। जब कमलमेर में मेवाड़ के मुख्य मुख्य योद्धाओं का ार हुआ तो पन्ना नाई को साथ लिये हुये वहाँ आई और ने रो रोकर अपना हाल सुनाया और शपथ पूर्वक कहा यह राणा साँगा का असली पुत्र उदयसिंह है। मैं इसका तौड़ से भगा लाई थी। जिस बालक को बनवीर ने मार ा था, वह मेरा लड़का था। आशाशाह ने उसी समय यसिंह की रक्षा का भार चौहान वंश के एक मुखिया सुपुर्द किया जो सब सरदारों में योग्य समझा जाता और जिससे पन्ना ने यह भेद प्रकट कर रक्खा था। दार ने उदयसिंह को छाती से लगा कर गोद में बिठा या और उसके साथ एक ही थाल में भोजन किया। नन्तर उदयसिंह को तिलक चढ़ाया गया और सब सरदारों भेंट दी।

राजपूतों के झुंड के झुंड चारों ओर से आने लगे। रसद सामान भी शीघ्र एकत्र किया गया। सोनगढ़ के रईस

न्तु जब उसकी सारी सेना उदयसिंह की सेना में जा ली, तो वह चित्तौड़ की ओर भाग गया।

यदि बुद्धिमानी से काम न लिया जाता तो सम्भव था चित्तौड़ का क़िला वर्षों में भी विजय न होता। बनवीर सेनापति राणा सांगा का पुत्र विक्रम था। उसने ऐसा न्ध किया कि एक दिन जब क़िले में सामग्री आ रही । और बहुत सी गाड़ियाँ क़िले में चली गईं, तो उनमें से क हज़ार राजपूत निकल पड़े। क़िले वालों ने उनका ना किया परन्तु मारे गए। उनमें बहुत से क़ैद भी कर ये गए। उदयसिंह ने बड़े हर्ष से अपने क़िले में प्रवेश या। सब फिर वैसा था, उसके नाम की तोपें धड़ाधड़ टने लगीं।

यदि बनवीर के साथ वही व्यवहार किया जाता, जो सने विक्रमादित्य के साथ किया था, तो बहुत ही अच्छा ोता, परन्तु राणा के सैनिकों ने कहा कि यह हमारे बुलाने र आया था, इसलिये इसको क्षमा कर देना चाहिये। राणा ने उसे क्षमा कर दिया। बनवीर अपने कुटुम्बियों के साथ दक्षिण की ओर चला गया और वहाँ उसकी सन्तान बहुत दिनों तक जीवित रही।

। ने अपनी लड़की भी उसे ब्याह दी। यह पहला राजपूत
। था जिसने मुसलमानों के साथ सम्बन्ध करके राजपूतों
। का मिटाया और कलङ्क का टीका लगाया। फिर क्या
मार्ग खुल गया। अन्य राजाओं की भी एक एक कर
अकबर ली गई और उनमें से बहुत से अकबर के साथ
। गये।

अकबर में मत मतान्तर का पक्ष नहीं था और न वह उनके
नेक सिद्धान्तों का खंडन करता था। उसने जज़ियाँ* कर
बन्द कर दिया था और हिन्दू यात्री स्वतन्त्रता से तीर्थों पर
सकते थे, परन्तु राजपूतों में ऐसे ऐसे महापुरुष भी थे जो
से मिलना नहीं चाहते थे। इनमें से एक उदयसिंह भी
। उसका यह ढङ्ग किसी अभिमान से नहीं था, किन्तु वह
ई और आलसी था। वह एक स्त्री के जाल में फँस गया था
र जब तक वह स्त्री उसके पास रही, उसने कोई भी काम
नें किया। अकबर ने मालवे के नव्वाब बाज़ बहादुर
पीछा किया था। उदयसिंह ने बाज़बहादुर का मूर्खता से
से यहाँ ठहरा लिया। इसका बदला लेने के लिये अकबर
मेवाड़ पर चढ़ाई कर दी। राणा चित्तौड़ में घिर गया,
न्तु उसने यह नहीं सोचा कि अब क्या करना

मुसलमान बादशाहों ने हिन्दुओं पर कर लगाया था। * या
वे इसलाम धर्म्म का स्वीकार या हिन्दू रहें तो कर चुकावें।
इसको जज़िया कहते हैं।

ग्नरों और भयंकर वीरता से मुग़ल सेना पर टूट पड़ीं। तलवारों ने हज़ारों मुसलमानों के सिर धड़ से अलग दिये परन्तु अन्त में बचने का कोई उपाय न देख कर े अपनी तलवारों से अपना सिर काट कर स्वर्ग लोक ली गई। सरदार देवता ने भी पवित्र स्वदेश भूमि की रना स्वीकार किया। उसने भी अपने लड़के को भेज था उनके अतिरिक्त और भी बहुत से राजपूत और आगये थे जो बड़े वीर और चतुर थे। सब इसी बात अटल जमे हुये थे कि मुसलमानों के हाथ से क़िले को करें। जान जाये तो भले ही जाये परन्तु क़िला हाथ से जाये। इन बहादुरों ने किया भी ऐसा ही। बड़े ज़ोरों की ई हुई। एक एक करके सब मारे गये। केवल एक ादुर सरदार बचा जिसने पीछे अपना पराक्रम खलाया।

अकबर अपने हथियार आप ही साफ़ कर रहा था और ोच रहा था कि क्या उपाय करूँ जिससे क़िले को शीघ्र ीन लूँ। उसकी सेना में बड़े बड़े चतुर कारीगर, लोहार, ढ़ई और राज मौजूद थे। वे क़िले के ऊपर से गोले बरसाते हुये शहर में चले आ रहे थे और बड़ी वीरता से अपना काम कर रहे थे। मरने मारने के लिये तैयार थे। ऐसे अनेक उपाय किये जा रहे थे कि जिन से क़िले पर अधिकार हो जाय! सैकड़ों बहादुर प्रतिदिन मरते थे। शेष मनुष्य उनकी

...पार के नीचे सिर झुका देते थे। विधवा माताएँ और ...वा स्त्रियाँ पुरुषों का भेष धारण किये और हाथ में भाला ...ये हुए सैनिकों के साथ में रहती थीं। स्त्री, पुरुष, युवा, वृद्ध ...कट कट कर मरते थे। अतः जाटों की स्त्रियों में इतना ...साहस और उत्साह था कि शस्त्र और कवच धारण करके युद्ध ...में पुरुष [illegible] रह सकते थे! इस युद्ध की घटनाएँ ...पूतों की कीर्ति में सर्वाधिक महत्व रखती हैं।

[illegible]

[illegible]

[illegible]

दह सब हुआ, किन्तु जयमल और पत्ता की अनुपम रता से अकबर बहुत प्रसन्न हुआ। उसने उन दोनों वीरों की नों हाथी पर चढ़वा कर हले किले में खड़वाई थीं नई पीछे औरङ्गजेब ने भूमि गड़वा दिया था।

वीर पत्ता

मेवाड़ में आज भी समय उन दोनों वीरों । वीरता के गीत वहाँ की स्त्रियाँ गाती हैं। सवेरे उठकर वाड़ के वीर पुरुष उन नों वीरों का नामस्मरण रते हैं। जब तक मेवाड़ र चित्तौड़ का नाम रहेगा - तक उन दोनों वीरों का नाम इस संसार में अमर गा।

हल्दी घाटी की लड़ाई

ड़ केवल चित्तौड़ ही में नहीं थे, किन्तु अन्य स्थानों प वे अपना दबदबा जमा रहे थे। रणथम्भौर का क़िल

इनकी काली काली आँखों और पीले चेहरे को पहले से देख खा था। उनके नाक की दाईं ओर एक मस्सा था, उसे भी ों ने देख लिया। यह अकबर के सौभाग्य का लक्षण झा जाता था। सब ने आसानी से पहिचान लिया कि ेष बदले हुये कौन हैं। उसको देखकर सब भयभीत हो । राजपूत अतिथि पर कभी अन्याय नहीं करते, परन्तु प्रश्न था कि इस भयङ्कर शत्रु के साथ क्या व्यवहार किया । यह निर्भीक सिंह की गुफा में चला आया है और यहाँ तैयारियाँ अपनी आँखों से देख चुका है। राजा मानसिंह क्या कहा जाय जिसने अपनी जाति को धोखा दिया। पूत इसी सोच विचार में थे, परन्तु अकबर उसी तरह र बैठा रहा।

राजा मानसिंह ने सुर्जनसिंह से कहा राणा का साथ दो, रणथम्भोर का किला दे दो। कहते हैं कि इस प्रकार भौर का किला अकबर के हाथ आगया परन्तु यह बात झ में नहीं आती कि राजपूत जैसे वीर योद्धा किस र दासत्व के बन्धन में फंस गये। सच तो यह है कि पूताने में फूट की ज्वाला भड़क उठी थी। प्रत्येक राज्य र्थ की चिन्ता में लगा हुआ था। जातीय जीवन और ीय उत्साह उनके मन से निकल चुका था। वे दिन जाते थे कि जब राणा साँगा ने सबको अपने झंडे के नीचे त्रित किया था। उदयसिंह इस योग्य नहीं समझा जाता

ा था कि यह मेवाड़ की जागीर समझा जावे। मैंने गंधों में कोई भाग नहीं लिया और न मैं इनसे कुछ ठाना चाहता हूँ। माना कि मैं निर्बल हूँ, मेरे पास सिपाही नहीं हैं कि मैं बादशाह से लड़कर उसे बचा लूँ, मैं राजपूतों के नाम पर धब्बा न आने दूँगा। मैं उसकी र लिए जाऊँगा कि राजपूतों के जीते जी रणथम्भौर मी का अधिकार न होने पावे यह कह कर उसने बाना धारण कर लिया और अपने सिपाहियों कर पान खाकर क़िले के फाटक पर आया और असंख्य ों का राख और रक्त में मिला कर आप भी उसी गया।

इस समय उदयसिंह निन्दनीय जीवन व्यतीत कर रहा किसी की भी दृष्टि में उसके प्रति भक्ति और श्रद्धा थी। युद्ध के समय जङ्गलों और पहाड़ों में जा छिपा। अकबर चला गया तब निकल कर बाहर आया और झील के किनारे अपने नाम से नगर बसाया जो अब उदयपुर कहलाता है। यद्यपि मेवाड़ के राणा लोगों में सबसे निकम्मा और मूर्ख हुआ है तथापि मेवाड़ देश अब उसके नाम से प्रसिद्ध है। उदयसिंह के जीने का के अतिरिक्त और कोई विशेष कारण नहीं था कि उसके बाद पुत्र थे। सबसे प्यारा पुत्र जगमल था, जिसको अपना युवराज बनाना चाहता था। नियमानुसार यह

उदयसिंह उनको मारने के लिये ले जा रहे थे। मार्ग में ठाकुर चन्द्रावत ने इसे देख लिया और जब उनको मालूम हुआ तो उनने कहा कि बालक को मुझे दे दो, मैं उसे मार डालूँगा। इसलिए उनके पास बालक को छोड़ दिया। उसने राणा के पास जाकर निडर होकर कहा कि मैं पुत्र-हीन हूँ, इसलिए मुझे दे दिया जाय। ऐसे यह चन्द्रावत पालक हुआ। उदयसिंह मेवाड़ के सब से अधिक बलवान सरदार की प्रार्थना का अस्वीकार न कर सका। चन्द्रावत [illegible] का बदला लेने में उठा कर ले गया और [illegible] में ले जाकर उसने उनके पालन पोषण का प्रबन्ध कर दिया।

चित्तौड़ की लड़ाई के बाद यहाँ पर उदयसिंह का देहान्त हुआ परन्तु उनके विद्रोह का देश में अधिक प्रभाव नहीं पड़ सका। वसन्त ऋतु थी, शिकार का समय आ गया था। इस ऋतु में राजपूत लोग शिकार खेलते हैं, परन्तु [illegible] कर चुका था। सरदार उनके समूह के चारों ओर [illegible] हुए थे, उनने अपने मारे से [illegible] और अपने का कुछ भी विचार नहीं किया।

[illegible] उदयसिंह की माता दुर्गेश के पास पहुँचा [illegible] यह है कि जब दुर्गेश माता के पास से जाकर [illegible] समाचार कहता है तब उसके मन में [illegible] का नाश होता है।

यार बाँधी और तीन बार झुककर प्रणाम किया और
ने जयध्वनि की।

ज्योंही राज्याभिषेक का कार्य समाप्त हुआ त्योंही प्रताप
सरदारों और मंत्रियों को सम्बोधित करके कहा कि यह
न्त ऋतु है, घाटों की भूमें कसना हो आवें और देश के
र पर वाराह बलि किया जाय जिससे यह वर्ष आनन्द से
बीत जाय और किसी प्रकार की आपत्ति या विपत्ति का
सामना न हो। राणा और उनके साथी घोड़ों पर सवार
। उनके सिरों पर हरे दुपट्टे बँधे हुये थे।

आनन्द से सब शिकार खेलने लगे। सभी उपस्थित जन
शिकार के फल पर मेवाड़ के भविष्य शुभाशुभ का विचार
ने लगे। महाराणा भी अपने सरदारों को इस अवसर पर
प्रोत्साहित और उत्तेजित करने लगे। अपने सरदारों को बड़े
जोर और उत्साह पूर्ण शब्दों में कहने लगे—सरदार
! मेवाड़ के वीरो!! स्मरण रक्खो कि आज वाराह के
शिकार पर ही मेवाड़ के भाग्य की परीक्षा निर्भर है। मत
समझो कि केवल शांति के समय में षोडशोपचार सहित घनघोर
पूजा अर्चना करके ही भगवती के सामने वाराह की बलि देने
कार्य सिद्ध हो जायगा। माता के सामने पशुओं की
न देते हो तो भले ही दो, लेकिन अच्छी तरह से याद रक्खो
हमारा महाव्रत जो चित्तौड़ को स्वाधीन करने का है यह
यवन सरदारों के बलिदान करने से ही नहीं हो सकता है।

बार पाँवों और तीन बार झुककर प्रणाम किया और
र से जयध्वनि की।

ज्योंही राज्याभिषेक का कार्य समाप्त हुआ त्योंही प्रताप
दरबारियों और मंत्रियों को सम्बोधित करके कहा कि यह
न्त ऋतु है, भालों की नोंकें चमका दी जायें और देश के
र पर वाराह बलि किया जाय जिससे यह वर्ष आनन्द से
बीत हो और किसी प्रकार की आपत्ति या विपत्ति का
मना न हो। राणा और उनके साथी घोड़ों पर सवार
। उनके सिरों पर हरे दुपट्टे बँधे हुए थे।

आनन्द से नये सब शिकार खेलने लगे। सभी उपस्थित जन
ट के फल पर मेवाड़ के भविष्य शुभाशुभ का विचार
ने लगे। महाराणा भी अपने सरदारों को इस अवसर पर
साहित और उत्तेजित करने लगे। अपने सरदारों को बड़े
प्यार और उत्साह पूर्ण शब्दों में कहने लगे—सरदार
! मेवाड़ के प्यारे !! अवश्य देखना कि आज वाराह के
कार पर ही मेवाड़ के भाग्य की परीक्षा निर्भर है। सब
स्मरण रहे कि केवल शांति के समय में लोहू और तलवार मर्दित कर
प्राप्त करके हो। जगदम्बा के सामने वाराह की बलि देने
करके विजय होगा। माता के सामने हम सुअरों की
बलि देते हैं जो अभी ही हैं, लेकिन जल्दी नाश से नाश करने
। जगदम्बा जो विद्रोह की समाप्ति करने का है वह
हम दस-बारहों के बलिदान करने से ही नहीं हो सकता है।

बार बाँधी और तीन बार झुककर प्रणाम किया और
ने जयध्वनि की।

ज्योंही राज्याभिषेक का कार्य समाप्त हुआ त्योंही प्रताप
सरदारों और मंत्रियों को सम्बोधित करके कहा कि यह
न्त ऋतु है, घाटी की झाड़ियाँ कमशः हाँ जायँ और देवी के
न पर वाराह बलि किया जाय जिससे यह वर्ष आनन्द से
तीत हो और किसी प्रकार की आपत्ति या विपत्ति का
मना न हो। राणा और उनके साथी घोड़ों पर सवार
। उनके सिरों पर हरे दुपट्टे बँधे हुये थे।

आनन्द में भरे सब शिकार खेलने लगे। सभी उपस्थित जन
शिकार के फल पर मेवाड़ के भविष्य शुभाशुभ का विचार
ने लगे। महाराणा भी अपने सरदारों को इस अवसर पर
साहित और उत्तेजित करने लगे। अपने सरदारों को यह
भार और उत्साह पूर्ण शब्दों में कहने लगे—सरदार
! मेवाड़ के वीरो!! स्मरण रक्खो कि आज वाराह के
कार पर ही मेवाड़ के भाग्य की परीक्षा निर्भर है। मन
झो कि देवस शान्ति के समय में षोडशोपचार सहित यदोर
हा स्तुति करके ही अनपने के सामने वाराह की बलि देके
कार्य सिद्ध हो जायगा। माता के सामने दस सुअरों की
ल देने हो तो भले ही दो, लेकिन सरदारो सदा से याद रक्खो
हमारा महाव्रत जो चित्तोड़ को स्वाधीन करने का है वह
बल बल-वारहों के बलिदान करने से ही नहीं हो सकता है।

चार बाँधी और तीन बार झुककर प्रणाम किया और ने जयध्वनि की ।

ज्योंही राज्याभिषेक का कार्य समाप्त हुआ त्योंही प्रताप [सरदा]रों और मंत्रियों को सम्बोधित करके कहा कि यह [illegible] वस्तु है, भाटों को [illegible] बतला दी जावें और देश के पर चारण बलि किया जाय जिससे यह पर्व आनन्द से बीत हो और किसी प्रकार का आपत्ति या विघ्न का पता न हो . राणा और उनके साथी घोड़ों पर सवार । उनके सिरों पर हरे कुल्हे बंधे हुये थे ।

आनन्द से भरे सब शिकार खेलने लगे । सभी उपस्थित जन सिंह के चाप पर मेवाड़ के अंतिम शुभाशुभ का विचार ने लगे । महाराणा भी अपने सरदारों को इस अवसर पर साहित और उत्तेजित करने लगे । अपने सरदारों को बहु मत और उत्साह पूर्ण शब्दों में कहने लगे—सरदार ! मेवाड़ के प्यारे !! स्मरण रखना कि आज शिकार के पर एक ही मेवाड़ के भाग्य की परीक्षा निर्भर है । सब [illegible] कि केवल [illegible] समर में ये पशु-संहार [illegible] [illegible] करके ही [illegible] के सामने [illegible] की बलि देने [illegible] विरुद्ध [illegible] । [illegible] के सामने एक [illegible] को [illegible] होने [illegible] हो [illegible], लेकिन [illegible] के हाथ [illegible] । [illegible] [illegible] को विजेता की [illegible] करते हुए है यह [illegible] ही के [illegible] करके से ही क्यों ही सकता है ।

[illegible] किया और [illegible] और [illegible] थी।

[illegible] और [illegible] और [illegible] के [illegible] और [illegible] था और [illegible] और [illegible] हुए थे।

[illegible] और [illegible] और [illegible] [illegible] है। [illegible] के [illegible] की [illegible] और [illegible] के [illegible] है।

उदयसिंह की मृत्यु के समय जो लोग
इधर उधर खड़े थे उनमें उसका साला सोनिगुरु
भी था जिसकी बहिन प्रताप की माँ थी। जब उसने
वचन सुने तो उसके नेत्रों में रक्त उतर आया।
सरदार ने कहा कि कोई चिंता मत करो, मैं शांति
सामने प्रताप का सहायक हूँ, परन्तु राज्याभिषेक की
जगमल के ही लिये होती रही समस्त सरदार
के राज्याभिषेक के देखने के इच्छुक थे। प्रताप ने दे
जगमल के शासन में मेरा जीवन नष्ट हो जायगा।
उसने अपने मित्रों के साथ मेवाड़ छोड़ने की तैयारी
यह समय निकट था कि सूर्यमुखी झण्डे के नीचे
राज्य सिंहासन पर आरूढ़ हो और सरदार
उसकी कमर से तलवार बांधे। एक ओर
चन्द्रावत और दूसरी ओर तुवर जाति का सरदा
था। यह वह वीर था जो चित्तौड़ की लड़ाई में
बचा था।

चन्द्रावत ने जगमल का हाथ पकड़ कर कहा—"आ
आपको भ्रम हुआ है। यह अधिकार आपका नहीं
के भाई प्रताप का है।" इससे पहले कि जगमल इस
में अपना क्रोध प्रकट करता, उसने उसकी बाँह पकड़
आगे खिसका दिया और राणा प्रताप को बुला भेजा।
स्थान पर चन्द्रावत ने स्वयं और शांति के सा

...ा, परन्तु उसने किसी पर प्रकट नहीं किया। उसके ... सुगम हो गयी थी, किन्तु दूसरे राजपूतों से ... र अमर सिंह रखता था। अजमेर, नागौर और ... के द्वारा विशेष ... मुगल हो चुके थे, और उनमें ... जीवन का आशा इतना कम हो गया था कि हिन्दुओं के ... से अपनी कन्या दूसरों का मुसलमानों के साथ ... कर दिया था और प्रताप का भाई ... अकबर ... मिल गया था। अकबर ने उसे गाँव, भूमि और ... दे दी थी और उसकी ... [illegible]

[illegible]

र था, परन्तु उसने किसी पर प्रकट नहीं किया। उसके केवल सुगुन ही नहीं थे; किन्तु दूसरे राजपूतों ने ी र पर कमर बांध रक्खी थी। आमेर, बीकानेर और ाड़ के राजा दिल्ली के गुलाम हो चुके थे, और उनमें ाय जीवन का जोश इतना कम हो गया था कि बूंदी के ाय सब ने अपनी अपनी पुत्रियों का मुसलमानों के साथ ाह कर दिया था और प्रताप का भाई सुगरसिंह अकबर जाकर मिल गया था। अकबर ने उसे गांव, भूमि और ार दे दी थी और उसकी तथा उसकी सन्तान की ार में बड़ी प्रतिष्ठा थी। अन्त में मेवाड़ युद्ध के कारण और जन दोनों से खाली हो गया था। केवल प्रताप ही साहस था कि जिसने इन आपत्तियों पर भी जातीय मन के उत्साह को दृढ़ रक्खा। यदि और कोई मनुष्य होता बादशाह के शासन में रहकर सांसारिक लाभ और भोग लाभ की इच्छा करता।

प्रताप मेवाड़ को स्थिर रखना चाहता था। चाहे शत्रु विजय प्राप्त न हो, परन्तु राजपूत लूटमार मचाते रहैं र दिल्ली वालों के नाक में दम करते रहैं। उसने क़सम खा ा था कि जब तक मुसलमानों को मेवाड़ से भगा न दूंगा ब तक मैं कभी चैन न लूंगा। उस समय से एक [डंका] ाजा जो सदा राणा की सेना के आगे रहता था पीछे रहने ागा। राणा ने इस बात का प्रण कर लिया था कि जब तक

करूँ। प्रताप तैयार होगया, परन्तु राजपूती धर्म अनुसार बहुत देर तक दोनों इस बात पर रुके रहे कि कौन वार करे। अन्त में यह निश्चय हुआ कि दोनों साथ वार करें। वे तैयार ही थे कि इतने में राजपुरोहित ड़ा हुआ आया और उसने युद्ध के रोकने की प्रार्थना दोनों की आँखें क्रोध से लाल हो रही थी। अब पीछे टा सन्धि करने का समय नहीं रहा था। भाले में लेकर एक दूसरे पर झपटे। पुरोहित नहीं चाहता कि दोनों भाइयों में युद्ध हो। उसने बीच में खड़े र अपनी छाती में छुरा भोंक लिया और उसकी लाश राजकुमारों पर अपनी बलि दे दी। यह बलिदान ऐसा था कि इसका प्रभाव राजकुमारों के हृदय पर न पड़ता। देख कर दोनों के हृदय काँपने लगे। दोनों ने अपने अपने थाम लिये और भूमि पर कूद पड़े तथा उसके प्राण के लिये उद्योग करने लगे, परन्तु उसके प्राण पखेरू उड़ थे। सारा विग्रह बह गया था जो अभी बढ़ रहा था तुम्हें रखने वाले पुरी ने तुम दोनों पर अपने प्राण न्योछावर कर दिये।

जब प्रताप शांत हुआ तो उसने शक्तसिंह से कहा कि सामने से सदैव के लिये चले जाओ। शक्तसिंह ने ऐसा किया। घोड़े पर सवार होकर दिल्ली की ओर चल दिया। उसी दिन से प्रताप ने एक भाई खो दिया और

हिर की तरह उतर आता था और उनको लूट लेता था,
दि इत्यादि के लिये बादशाह के पास आते थे।
एक दिन की बात है कि एक बेचारा गड़रिया अपनी
चरा रहा था। उसने सोचा कि यहाँ आकर कौन
ा; परन्तु राणा वहाँ पहुँच गया और उस से प्रश्नोत्तर
के बाद उसको मार डाला और उसकी लाश का एक
पर लटका दिया गया जिससे औरों को भय हो और
राणा की अवज्ञा करने का साहस न हो।
अकबर इन सब बातों को बड़े ध्यान से देखता था।
मदा राणा के साथ शत्रुता नहीं रखना चाहता था।
विभाग का मंत्री टोडरमल राजपूत था। भगवानदास
मानसिंह आदि कई राजपूत सरदार अकबर के यहाँ
थे। अकबर को हिन्दुओं से कुछ द्वेष नहीं था। उस
नवास में कई हिन्दू रानियाँ थीं, उनको अपनी अपनी
के अनुसार पूजा करने की आज्ञा थी अकबर गोरक्षा
और विशेष ध्यान देता था। इन सब बातों के होते
भी किस कारण से अकबर ने प्रताप के विरुद्ध युद्ध
आ किया यह एक विचारणीय प्रश्न है। राजपूत इसको
वर्णन करते हैं कि आमेर का राजा मानसिंह अकबर
ओर से काबुल को जीत कर आ रहा था। जब वह
बाड़ से होकर गया तो उसने महाराणा प्रतापसिंह को
हला भेजा कि यदि आज्ञा हो तो मैं प्रणाम करता आऊँ

। हाथ का छुआ पानी तक भी पीता हूँ इनाम
लेता हूँ।

यह शब्द सुनकर मार्तण्ड को क्रोध आगया। उसने
। दिया और उनके साथियों को लेकर वहाँ से
हुआ हुआ और कहने लगा कि तुम्हारे हाथ से लिखा
... के जो देवताओं पर चढ़ाए जाते हैं और कुछ
...गा। मैंने तुम्हारे जीवन का रक्षा करने के लिये भाला
... कर दिया और उनकी शक्ति और पुत्रियों को
... को सौंप दिया। यदि तुम आपत्ति में रहना
... हो तो तुम्हारा इच्छा। पर ईश्वर तुम्हारा रक्षा करेगा।

मार्तण्ड का संकेत पाते ही साथी सवारों ने घोड़ों पर
... ली और उधर वे चलने को तैयार होगये तो
... मार्तण्ड के आगे। उनका शरीर चिथड़ों से
... फटे हुए थे; परन्तु फिर भी उनके चेहरे
... से प्रकट होता था कि अवश्य हिन्दुओं का कुछ
... का राजा है। उनके देखते ही मार्तण्ड के
... नमस्कार न रहा। वह कहने लगा कि यदि
... मान है तो मैं तुम्हारे साथ चलने को तैयार रहूँगा।
... ने शीघ्र से उत्तर दिया कि अब ही चलिये आप,
... हम सवार तैयार खड़े हैं। मनुष्य में सर्व प्रकार
... होते हैं। राजा के साथियों में से किसी एक ने

का उचित नहीं था। जो कोई ऐसा करता था वह कायर और समझा जाता था। और राजपूतों के पास कोई परन्तु नहीं थी जिस पर उनको भरोसा हो। उन्हें केवल के बाहुबल पर भरोसा था। इस युद्ध में भाई के विरुद्ध और सम्बन्धी के विरुद्ध सम्बन्धी खड़े किये गये थे। सिंह भी मुसलमानी सेना में सम्मलित था। महाराणा, र का भतीजा और उनके सगे भाई सुगरसिंह पुत्र सब मरने मारने के लिये आये हुए थे। सलीम स्वयं पूर्ती माता के उदर से था। उसकी बगल में आमेर राजा मानसिंह था। प्रताप ने कहा, चाहे युद्ध भी ं न हो, परन्तु मैं मानसिंह को उसकी करनी का द चखा दूंगा।

महाराणा प्रतापसिंह की ओर केवल २२ हजार राजपूत परन्तु वे सब अनुभवी और बांके राजपूत थे। तलवार उनका और तलवार की उनसे शोभा थी। उनमें से ड़े से बड़ा के बच्चे तक भी थे। परन्तु अकबरी सेना के लने के लिये तिलंगे में थे। हाथी और तरबूज की लड़ाई ८० लाख सेना एक ओर थी और २२ हजार एक र १५ [illegible] हल्दीघाटी मैदान [illegible] से निकलते थे। इस प्रकार का युद्ध नहीं हुआ [illegible] अनुमान नहीं था। वे जान पर खेल के [illegible] में घुसे [illegible] से मुगलों पर [illegible] इधर से

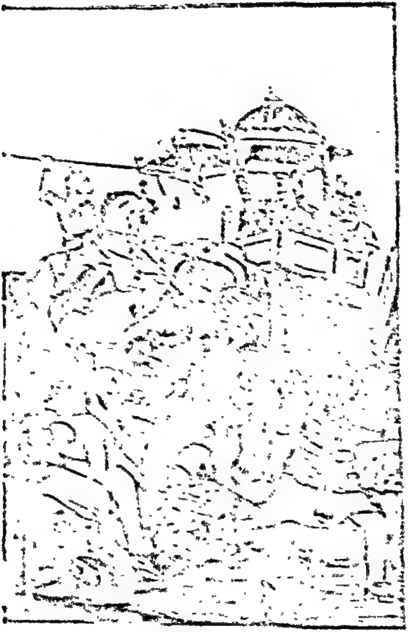

याराग्यल की सन्तान में से कदाचित किसी ने इस
शत्रु के दांत खट्टे किये होंगे। यह निर्भयता से लड़ता
। मरते मरते उसने हाथ से, पांव से और तलवार से
ी शत्रुओं का रक्त और राख में मिलाया। अन्त में शत्रुओं
ने इस प्रकार वध किया जिस प्रकार वध किये हुये सिंह
चोंटियों को पंक्ति पकड़ लेती है। उसके १५० साथी भी
के साथ लड़ते हुये वैकुंठवासी हुये। उन्होंने मरते दम
अपने मालिक का साथ दिया। और ना जिनने ही
पूत योद्धाओं ने मातृभूमि के गौरव की रक्षा के लिये
ते हँसते प्राण न्योछावर किये। २२ हज़ार राजपूतों में
वल ८ हज़ार राजपूत बचे। १४ हज़ार स्वदेश के लिये मर
अपनी कीर्ति अमर कर गये। रणभूमि से आगे निकलकर
ाप अकेला घोड़ा दौड़ता हुआ चला जा रहा था, जिससे
सी जगह पहुँच कर आराम करे। राजपूत लड़ते हुये आ
थे, जिससे शत्रुओं को राणा का पता न लगे। यह सच्चाई
र स्वामि-भक्ति कहाँ देखने में आई है? प्रताप मन ही मन
पछताता था कि हाय! मैं क्यों न आज मेवाड़ के काम
आया। इससे अच्छा मरने का दिन अब कौन सा आवेगा।
र उसने सोचा कि नहीं, अमरसिंह किसी काम का नहीं।
रा दिनों जीवित रहना आवश्यक है जिससे मेवाड़ को
ानि न पहुँचे। चेतक हवा से बातें करता हुआ जा रहा
ा, रास्ते में घोड़े की टापों की आवाज़ कान में पड़ी। राणा

दूर!

[illegible]ने आकर खड़ा होगया, परन्तु किस लिये ? क्या [illegible] के निपटारे का दिन था जिसको रोकने के [illegible]-पुरोहित न [illegible] आज [illegible] थी ? ज्योंही प्रताप [illegible] जान [illegible] से [illegible] आगई और उसका [illegible] [illegible] ! धन्य है, तेरा [illegible]

[illegible] मुझको [illegible] देखने [illegible] नहीं है। [illegible] और [illegible] के दोनों [illegible] मुझको कोई भय [illegible]।

[illegible] दिखाई [illegible] दोनों [illegible] एक दूसरे [illegible] आपको [illegible] आगे [illegible] के [illegible] जाता है। [illegible] और [illegible] देखो [illegible] कुछ दिनों के [illegible] है और [illegible]।

[illegible] और [illegible] के साथ [illegible] और [illegible]

जहाँ बादशाह होता है, वहीं उसका दरबार होता है, (हो या मैदान, जङ्गल हो या टीला, महल हो या श्मशान, वह होता वहीं राज जहाँ समझो जानी। उनके साथ (स्वामिभक्ति थे। वे आपत्ति के समय में भी उनका देते थे। उनका भोजन फल फूल या घास की रोटियाँ थीं, लेकिन राणा जो वस्तु हाथ से उठा कर सरदारों (देता था, उसे वे बड़ी श्रद्धा से ले लेते थे। इस बुरे य में भी राणा का बड़ा सम्मान किया जाता था। इस ाप उत्साह और वीरता का दृष्टान्त और कहाँ मिलना भूखे प्यासे राजपूतों के लिये न कोई डेरा था और न सहारा। उनकी जान सदा जोखम में रहती थी। थोड़ी म्रता करने पर उनका माल धन मिल सकता था; है से अच्छे नर्म बिस्तरे के पलंग मिल सकते थे, फौज सरदारी मिल सकती थी। विवाह करके वे सन्मान मि कर सकते थे जो आज तक उनके नाम को लिए नो। हरवक्त उनके मुँह की ओर देखा करता था। केवल ः मुँ ने की देर थी; परन्तु क्या कभी किसी ने दि ावि नहीं। एक शब्द भी उनकी जिह्वा पर जब तक राणा को अपने स्वाभिमान का तक घर अपनी बात का पक्का रहा; जब आत्म-गौरव की रक्षा की तब तक उसके आगे मोहित रहे और अपने

जहाँ बादशाह होता है, वहीं उसका दरबार होता है, ह हो या मैदान, जङ्गल हो या टीला, महल हो या श्मशान, वह होता वहीं राज गद्दी समझी जाती। उसके साथी वे स्वामिभक्ति थे। वे आपत्ति के समय में भी उसका । देते थे। उनका भोजन फल फूल या घास की रोटियाँ । थीं, लेकिन राणा जो वस्तु हाथ से उठा कर सरदारों दे देता था, उसे वे बड़ी श्रद्धा से ले लेते थे। इस बुरे य में भी राणा का बड़ा सम्मान किया जाता था। इस लिए उत्साह और वीरता का दृष्टान्त और कहाँ मिलना भूखे प्यासे राजपूतों के लिये न कोई डेरा था और न सहारा। उनकी जान सदा जोखम में रहती थी। थोड़ी नम्रता करने पर उनको माल धन मिल सकता था। है से अच्छे नर्म बिस्तरे के पलंग मिल सकते थे, फौज सरदारी मिल सकती थी। विवाह करके वे सन्तान पन्न कर सकते थे जो आज तक उनके नाम को लिए नी। अकबर उनके मुँह की ओर देखा करता था। केवल के मुँह खोलने की देर थी; परन्तु क्या कभी किसी ने सा किया? कदापि नहीं। एक शब्द भी उनकी जिह्वा पर भी नहीं आया। जब तक राणा को अपने स्वाभिमान का चार रहा तब तक वह अपनी बात का पक्का रहा; जब क उसने अपने आत्म-गौरव की रक्षा की तब तक जपूत भी उसके ऊपर मोहित रहे और अपने

के लिये उसने शहर में एक विशेष मोहल्ला बसाया
र उनके साथ वह प्रेम और आदर का व्यवहार करता
जिसके कारण उन्हें उसकी आधीनता बुरी नहीं
थी। परन्तु कट्टर और पक्षपाती मुसलमान उसके
हार के व्यवहार से चिढ़ गए थे। बीकानेर के राजा
पुत्र रायसिंह और पृथ्वीराज मुग़ल दरबार में
थे। उनको बड़ी बड़ी पदवियाँ दी गईं। रायसिंह को
र मनसब का ब्याह कर दिया गया। पृथ्वीराज वीर
होने के अतिरिक्त कवि भी था। जो राजपूत अकबर
न हुए थे, उनमें वह सबसे अच्छा समझा जाता
उसका सम्बन्ध प्रताप की भतीजी अर्थात् शक्ति की
से हो रहा था। उस युग में राणाओं का रक्त था,
कारण वह वीरता, धीरता, लज्जा और सुन्दरता में
प थी।

अकबर ने अपने दिल बहलाने के लिये मीना बाज़ार
रक्खा था, जो प्रति मास महल के हाते में लगता
था उसमें बेगमें, महारानियों, राजकुमारियों तथा
रदारों की बहू बेटियों तक को वहीं आना पड़ता था।
ना बनाई हुई वस्तुएँ वहीं बेचा करती थीं। अकबर
ला हुआ घूम फिरा करता था, व्यापारियों की स्त्रियों
ता देता था। वस्तुएँ वहीं से आने भी लगती थीं। इस
में न केवल स्त्रियाँ सौदा खरीद सकती थीं, परन्तु

से सटक कर गिर पड़ी। इस पर अमरसिंह ने उस के घर को बुरी दृष्टि से देखा। तभी राणा ने अपने मन समझ लिया कि मेरे लड़के में श्रम और स्वभाव की रता नहीं है।

प्रताप बिना किसी प्रकार के भय और संकोच के युद्ध कठिनाइयों को सहन करता रहा, परन्तु अब उसकी नष्ट हो चुकी थी और सहन करने की शक्ति उसमें कुछ नहीं रही थी। सरदार उसकी अन्तिम आज्ञा सुनने बुलाये गये। मृत्यु शय्या पर लेटे हुये राणा के मुख से ह का शब्द सुनकर सरदार चन्दावत ने फिर प्रश्न किया आपको किस बात का कष्ट है जिसके कारण आपकी त्मा दुःखी हो रही है। प्रताप ने आँखें खोल दीं और कहा मैं शायद शान्ति न मरूँ। मैं चाहता हूँ कि आप सब लोग तिज्ञा करें कि मेवाड़ के साथ आप प्रेम करेंगे और हमारा तुर्कों के हाथ में न आयगा। इससे मुझको शांति होगी। सके पश्चात् फिर कहा कि अमरसिंह से मुझे आशा नहीं कि यह देश और धर्म को रक्षा कर सकेगा। यह इन झोपड़ झोपड़े में रहना पसन्द न करेगा, उसके समय में ये झोंपड़े गिरवा दिये जायेंगे और उनके स्थान में महल बनवाए जायेंगे। [illegible] सुनकर [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

शक्तसिंह के सोलह पुत्र

हा प्रताप का कहना सत्य निकला। उसका पुत्र और के सरदार अपनी प्रतिज्ञा को भूल गये। अमरसिंह अपनी साहस और वीरता अवश्य थी। परन्तु उसने सम्पूर्ण आयु लड़ाई-भिड़ाई, दुःख और कष्ट में व्यतीत की। शत्रुओं से लड़ते लड़ते उकता गया था। यह अस्वा न था। प्रत्येक आदमी में स्वभावतः आराम की इच्छा है पर प्रताप ने कभी उसको ऐसा अवसर नहीं दिया अब प्रताप की मना करने वाली आवाज़ संसार से उठ थी। अब मुगलों को देश नाश करने वाला कोई नहीं। अमरसिंह भोग विलासी होगया था और उसने अवस्था के कष्टों के स्थान में नाना प्रकार के भोग विलासों लिप्त होगया था। कुछ वर्षों तक वह निडर होकर पुर के संगमरमर वाले महल में जो झील के किनारे रहा और उसने अपनी इच्छा को पूर्ण करने के लिये बना था नर्म पलंग पर लेटा हुआ नाचने वालों का नाच देखता रहा, अपनी अन्य इच्छाओं की तृप्ति करता रहा। यह महल शीशों से मढ़ा हुआ था और वह उसको देखकर बहुत प्रसन्न होता था।

अकबर घबड़ा कर मरणोन्मुख था। जब उसकी दृष्टि

[illegible]

मातृभाव को त्याग कर दिल्ली का दासत्व स्वीकार
[य]या था।

[सं]सार की नाशमान् वस्तुओं पर धर्म का अर्पण करने
थोड़ी देर के लिये विचारें। जो लोग नाश होने वाले
विलासों के कारण अपने देश और जाति की परवा
[क]रते वे इस घटना पर विचार करें। सुगर चित्तौड़ में
जहाँ चारों ओर उदासी ही उदासी छाई हुई थी।
[ों] के खण्डहरों में उल्लू और चमगीदड़ रहते थे। यह
[स्था]न था जहाँ राजस्थान के योग्य राजपूतों ने एक
[ए]क भूमि को अपने रक्त से रङ्ग दिया था। उसमें
[रा]वल का रक्त भी विद्यमान था। चित्तौड़ के विनाश के
[हों]ने कल्पित वेष धारण कर उसके हृदय पर आक्रमण
प्रारम्भ कर दिया, 'अरे राजपूत! तू मुसलमानों की
[से]ना से चित्तौड़ पर शासन करने आया है। क्या तू नहीं
[ता] कि जातीय अभिमान और देश हित में स्त्री पुरुष,
बालक सब ने अपने प्राण न्योछावर कर दिये थे?
आत्माएँ अब भी बदला लेने के लिये चिल्ला रही हैं।
[अ]न्याय के कारण स्त्रियों ने, पुरुषों ने, यहाँ तक कि
बच्चों ने भी प्राण दे दिये थे, आज तू उनको अपना
[श]त्रु बना रहा है। अरे नीच! तू इतना निर्लज्ज होगया
[कि] उनकी सहायता से चित्तौड़ पर शासन करने आया
तो सही किस भाँति तेरा पैर यहाँ जमता है।' पूरे

र पुत्र उत्पन्न हुए। मरते समय १७ पुत्र उसके पलंग के ओर खड़े थे। जब वह मर गया तो बड़े पुत्र ने कहा भाई क्रिया कर्म के लिये अर्थी के साथ जावें और मैं किले की रक्षा करूँगा। १६ भाइयों ने उसका कहना तया, परन्तु जब वे क्रिया कर्म करके किले के द्वार पर तो उसे बन्द पाया। बड़े भाई ने खिड़की से शिर निकाल हा कि मैंसकर इतने मनुष्यों की रक्षा का भार नहीं ले , उचित है कि तुम और स्थान पर जाकर अपना अपना कर लो। १६ भाईयों ने चूँ तक नहीं की, उन्होंने कहा— न अच्छा हमारे हथियार और घोड़े हमको दे दो, फिर तुमको कोई कष्ट न देंगे।" हथियार और घोड़े उनको गये और वे सब के सब अपने बाल-बच्चों को साथ आजीविका की चिंता में चल पड़े। अचलसिंह उनका र बना और बल्लूसिंह जो सब से अधिक बलवान था, दाहिना हाथ बनाया गया।

ईडर की ओर चल पड़े जो मेवाड़ से दक्षिण की है और जिस पर मारवाड़ के राठौरों का उस समय कार था, परन्तु अभीष्ट स्थान पर पहुँचने से पहले अचल बीमार हो गई और आगे जाना असंभव हो गया। सिंह ने अनेक उपाय किये कि उसके लिये कोई विश्राम गन मिल जाय, परन्तु सब व्यर्थ हुआ। एक सरदार से ना की गई कि थोड़ी देर के लिये उस बेचारे को सहारा

उनका शामियाना गड़ने लगा, पानी की धार में ... घर से बाहर आई और ... की ... दौड़ती हुई ... घर में ले गई। उसे अपने ... का ... को अपने ... था। उसने यह उचित ... भांति समझ ... और पानी के समय ... कि एक दुर्लभ ... आंधी ... जाये।

... प्रसन्न हुआ उसने ... कहा कि ... आप लोग ... सुन ... [illegible] ... उत्तर दिया कि ... [illegible]

[illegible]

[illegible]

सर्म्रसिंह के पुत्रों ने अपने वंश के विजय की व्यवस्था की। चन्द्रावत के साथ एक बड़ा बहादुर देवगढ़ का [illegible]र था। शिकार में या लड़ाई में कभी उसका हाथ खाली [illegible] गया था। वह ऐसा बहादुर था कि हाथ भर में लाशों के [illegible]ला देता था। जब उसने सरदार को गिरते हुए देखा [illegible] उसकी लाश की ओर झुका और उसने लाश को [illegible] दुशाले में बाँध कर कंधे पर रख लिया और घोड़ा पर [illegible]दा। ऊपर से गोलियाँ बरस रही थीं, परन्तु उसने कुछ [illegible] न की। उसने तलवार पर चढ़कर लाश को किले में [illegible] दी और आड़ से चिल्लाकर कहा—'राणा के पीछे [illegible] का हुक्म था। [illegible] को [illegible] विजय [illegible] है।' चन्द्रावत [illegible] सरदार का [illegible] दिए। वे भी तलवार पर चढ़ गए। फिर [illegible]

[illegible]

...था इस बूढ़े के सामने सिर झुकाना पड़ा, ...ड़ाई में इसे हरा दिया था। शाहजहाँ ने आकर ...रोध प्रार्थना की कि आप क़िले के बाहर आकर ...ो स्वीकार कर लीजिये और केवल इतना ही ...े पर मेवाड़ से मुसलमानों की सेना हटा ली ...ु राणा ने साफ़ इनकार कर दिया और कहा कि ...ान सिसोदिया से मिलने आता हूँ इसके अतिरिक्त ...ीं कर सकता।

...ड़ना से कुछ दिन पीछे ...र था कुछ वर्ष सिर [illegible] [illegible]

[illegible]

पावे। इसी लिये मैंने अपने पुत्रों को लिखा कि राणा से डरो—"मैंने उसको क्षमा कर दिया और मैंने मित्रता का भेजकर अपनी कृपा का उसे विश्वास दिलाया।"

राणा सुगमता से आधीन होगया। यद्यपि जहाँगीर निर्दयी प्रसिद्ध था और शराब के नशे में चूर रहता था किन्तु भी वह बहुत अच्छा था। उसको इस बात का ध्यान था कि सभ्य और कुलीन शत्रु के साथ उसके विनाश के समय मेल और आदर से व्यवहार करना चाहिये। राणा को यह वचन दिया गया कि किसी समय उसे शाही दरबार में हाज़िर होने की आवश्यकता नहीं है। किले के भीतर ही वह सभी आज्ञाओं का पालन किया करें और आवश्यकता के समय एक हज़ार सवार शाही फौज की सहायता के लिये भेजता रहे। अमरसिंह से केवल इतना ही करने को कहा गया। अमरसिंह ने यह भी कहला भेजा कि वृद्धावस्था के कारण मैं शाही दरबार में नहीं आ सकूँगा। बादशाह ने यह भी स्वीकार कर लिया है परन्तु शाहज़ादे के साथ निबाह नहीं बन सकता था। राणा उससे मिला और इससे राज़ी हुआ। उसका बड़ा बड़ा और आदर से स्वागत किया गया और विदा होते समय उसे बहुत भेंटें दी गईं। शहज़ादा भी आधा राजपूतों जैसा था। उसकी माता राठौर की राजकुमारी थी। अमरसिंह को अनुभव को देख कर विस्मित हो गए। शाहज़ादा और विजयी युवक ही भी हो क्यों मुसलमान हुआ